KAAV INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMICS, COMMERCE & BUSINESS MANAGEMENT
A REFEREED BLIND PEER REVIEW QUARTERLY JOURNAL
KIJECBM/ JAN-MAR (2018)/VOL-5/ISS-1/A4 PAGE NO.11-13
ISSN: 2348-4969 IMPACT FACTOR (2017) – 7.8902
UGC APPROVED JOURNAL NO. 47663
WWW.KAAVPUBLICATIONS.ORG

पातञ्जल 'योग सूत्र' का संक्षिप्त विवरण

लेखक

[1]पूनम रानी

[1]जिला रोहतक हरियाणा

सारांश

पतञ्जलि का 'योगसूत्र' विद्वत्परिषद् में एक मौलिक ग्रन्थ के रूप में समाहित है। यह अत्यन्त स्वच्छ तर्क सम्मत, गूढ़ार्थ एवं अपनी कोटि का अद्वितीय ग्रन्थ है। इसके अन्तर्गत स्वल्प शब्दों में अत्यन्त ''प्रवीणतापूर्वक–यौगिक प्रक्रियाओं के निरूपण के साथ–साथ आत्मकल्याण का मार्ग प्रदर्शित किया गया है, जैसा कि योगसूत्र नाम से ही ज्ञात होता है। जिससे अल्प अक्षरों में सारगर्भित, महान्, गम्भीर, अनिन्द्य एवं असंदिग्ध ज्ञान हो –

'अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवदूंविश्वतो मुखम्।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रबिदो विदुः।।[1]

पतञ्जलि का 'योगसूत्र' विद्वत्परिषद् में एक मौलिक ग्रन्थ के रूप में समाहित है। यह अत्यन्त स्वच्छ तर्क सम्मत, गूढ़ार्थ एवं अपनी कोटि का अद्वितीय ग्रन्थ है। इसके अन्तर्गत स्वल्प शब्दों में अत्यन्त ''प्रवीणतापूर्वक–यौगिक प्रक्रियाओं के निरूपण के साथ–साथ आत्मकल्याण का मार्ग प्रदर्शित किया गया है, जैसा कि योगसूत्र नाम से ही ज्ञात होता है। जिससे अल्प अक्षरों में सारगर्भित, महान्, गम्भीर, अनिन्द्य एवं असंदिग्ध ज्ञान हो –

'अल्पाक्षरमसंदिग्धं सारवदूंविश्वतो मुखम्।
अस्तोभमनवद्यं च सूत्रं सूत्रबिदो विदुः।।[2]

योग चार पादों में विभक्त है।

प्रथम 'समाधिपाद' में योग के स्वरूप, भेद, उद्देश्य, चित्त, चित्तवृत्तियाँ एवं उनके निरोध के उपाय वर्णित हैं। साथ ही वितर्कादि विविध समाधियों तथा समाध्यवस्था में चित्त की दशा का भी वर्णन है। यह पाद समाहित चित्त से युक्त उत्तम अधिकारियों के लिए है। 'समाधिपाद' नाम के अनुरूप ही इसमें मुख्यतया योग (समाधि) के स्वरूप का ही सविस्तार वर्णन है। द्वितीय 'साधनपाद' में विक्षिप्त चित्त युक्त मध्यम अधिकारियों के लिए समाधि की साधना हेतु साधन बतलाए गए हैं। इसमें क्रियायोग, क्लेश, कर्म, विपाक तदनुसार जाति, आयु, भोगादि की व्यवस्था, क्लेश–निवृत्ति के साधन, हेय, हेयहेतु, हान, हानोपाय तथा अष्टांग योग के पंच बहिरंग साधनादि विषय वर्णित है।

श्री वाचस्पति मिश्र ने 'योग वैशारदी' में निम्नलिखित श्लोक से इस पाद में प्रतिपादित विषयों का संग्रह इस प्रकार लिखा है –

'क्रियायोगं जगौ क्लेशान् विपाकान् कर्मणामिह।
तद् दुःखत्वं तथा व्यूहान् पादे योगस्य पञ्चकम्।।[3] इति।

क्रियायोग, क्लेश, कर्मफल, दुःखता तथा व्यूह, ये पाँच विषय इस द्वितीय पाद में निरूपण किये गए हैं। तृतीय 'विभूतिपाद' में सबीज समाधि के अन्तर्गत साधन (धारणा, ध्यान एवं समाधि) का वर्णन है। पुनः योग में श्रद्धा उत्पन्न करने के लिए तथा असमाहित चित्र बालों की चित्तस्थिति–हेतु–योगाभ्यासजन्य सिद्धियों एवं उनके अनासक्ति आदि

1. 'पातञ्जल योग सूत्र' का तुलनात्मक एवं विवेचनात्मक अध्ययन, शुक्ला, पृ० 34
2. 'पातञ्जल योग सूत्र' का तुलनात्मक एवं विवेचनात्मक अध्ययन, शुक्ला, पृ० 34
3. 'पातञ्जल योगदर्शनम्', स्वामी ब्रह्मलीन मुनि, पृ० 312

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

विषय वर्णित हुए हैं। श्री वाचस्पति मिश्र 'योग वैशारदी' में निम्न श्लोक के द्वारा इस पाद में वर्णित विषयों का संग्रह इस प्रकार किया है –

'अत्रान्तरङ्गव्यङ्गानि परिणामाः प्रपञ्चिताः।
संयमाद् भूत संयोगास्तासु ज्ञानं विवेकसम्।।[4] इति।।

इस तृतीय पाद में योग के अन्तरङ्ग अङ्ग तीन प्रकार के परिणाम, संयम से भूत संयोग तथा उनमें विवेकजन्य ज्ञानादि विषय निरूपण किए गए हैं। चतुर्थ 'कैवल्यपाद' में पाँच प्रकार की सिद्धियों का निरूपण, निर्माण, चित्त का कथन, समाधि लाभ, कैवल्योपयोगी चित्त का वर्णन तथा चित्त विषयक सभी शंकाओं का समाधान, युक्ति सहित विज्ञानवाद का खण्ड़न तथा आत्मा आदि विषयों का वर्णन किया गया है, और अन्त में कैवल्य के स्वरूप का निरूपण किया गया है।

आचार एवं नीति

1. आचार से अभिप्राय

आचार शब्द आ उपसर्ग पूर्वक चर् धातु से धञ् प्रत्यय लगने से बना है जिसका अर्थ है आचरण व्यवहार, काम करने की रीति, चाल–चलन।[5] आचार शब्द को नीति का समानार्थक समझना उचित है। नीति शब्द 'नी[6]' धातु में 'क्तिन्' प्रत्यय से बना है जिसका अर्थ है ले जाना या ले चलना या ले जाने का तरीका।[7] जीवन को लक्ष्य की और किन–किन नियमों के पालन से ले जाना जा सकता है, वही नीति या आचार है। आचार या नीतिशास्त्र यह देखता है कि कौन से नियम या सामान्य सिद्धान्त ऐसे हो सकते हैं जिनके अनुसार व्यक्ति अपने आचरण को विशिष्ट बनाकर सर्वोच्च साध्य को प्राप्त कर सकता है। 'आचार शास्त्र' का विषय कोई विशिष्ट साध्य न होकर परम या चरम साध्य है जो जीवन का लक्ष्य है।

1.1 मनुस्मृति में प्रतिपादित 'आचार' शब्द से अभिप्राय

मनुस्मृति के प्रथम अध्याय के 108–110 श्लोंको में आचार का वर्णन प्राप्त होता है। मनु के अनुसार वेदों तथा स्मृतियों में कहा गया आचार श्रेष्ठ धर्म है, अपने हित के इच्छुक अभिलाषी द्विज को इसमें प्रयत्नवान् होना चाहिए।[8] इसके अनुसार आचार भ्रष्ट ब्राह्ममण वेदों के फल को प्राप्त नहीं कर सकता तथा आचारवान् ब्राह्मण वेदों के सम्पूर्ण फलों का भागी होता है।[9] तदुनसार आचार को तपस्या के मूल के रूप में स्वीकार किया है और इससे धर्म लाभ भी बताया है।[10] चतुर्थ अध्याय में भी आचार का विवेचन प्राप्त होता है। वहाँ मनु ने वेदों तथा स्मृतियों में कहे गए धर्ममूलक आचार का पालन करने की बात कही है।[11] आचार से मनुष्य वेदों में प्रतिपादित दीर्घायु को प्राप्त करता है। अभिलषित सन्तान को प्राप्त करता है, आचार से अत्यधिक धन की प्राप्ति होती है और आचार शरीर के अनिष्ट आदि लक्षणों का नाश कर देता है।[12] इस प्रकार मनुस्मृति में विभिन्न स्थानों पर आचार की चर्चा मिलती है।

1.2 शब्दकल्पद्रुम के अनुसार 'आचार' शब्द का अर्थ

आचार्य हेमचन्द्र ने शब्दकल्पद्रुम में आचार के अर्थ में प्रायः व्यवहारः, चरित्रं, चरितं, चारित्रं, चरणं वृतं, शीलं आदि शब्दों का उल्लेख किया है।[13] सभी दर्शनों ने आचार को परम धर्म माना है और आचार की महिमा का गुणगान किया है। उनके अनुसार आचार विहीन व्यक्ति को वेद भी पवित्र नहीं कर सकते 'आचारहीने न पुनन्ति वेदाः।[14]

1.3 पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार आचार

मैकेञ्जी के अनुसार – आचार विज्ञान मानवीय जीवन में उपस्थित आदर्श का विज्ञान एवं सामान्य अध्ययन है।[15] उयूईके अनुसार – आचार विज्ञान का विषय व्यवहार का सत् और शुभ खोज निकालना है। मूर ने भी आचार विज्ञान को परम शुभ का विज्ञान कहा है।[16] यहाँ विज्ञान शब्द वि + ज्ञा + ल्युट् से बना है जिसका अर्थ है विशिष्ट ज्ञान। अर्थात् जो हमें आचार से सम्बन्धित विशिष्ट ज्ञान करावें, वह आचार विज्ञान कहलाता ळें

---

4. पातञ्जल योगदर्शनम्', स्वामी ब्रह्मलीन मुनि, पृ० 465
5. संस्कृत, हिन्दी कोश, वामन शिवराम आप्टे, पृ० 141
6. वही, पृ० 550
7. नीति शास्त्र का इतिहास, पृ० 9
8. आचारः परमो धर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त एव च। तस्मादस्मिन्सदायुक्तो नित्यं स्यादात्मवान् द्विजः।। मनु०, 1/107
9. आचाराद्विच्युतो विप्रो न वेदफलमश्नुते। आचारेण तु संयुक्तः संपूर्णफलभाक्स्मृतः।। वही, 1/109
10. एवमाचारतो दृष्ट्वा धर्मस्य मुनयो गतिम्। सर्वस्य तपसो मूलमाचारं जग्रहुः परम्।। वही, 1/110
11. श्रुतिस्मृत्युदितं सम्यङ्निबद्धं स्वेषु कर्मसु। धर्ममूलं निषेवेत सदाचार
12. आचारालभते ह्यायुराचारादीप्सिताः प्रज्ञाः। आचाराद्वनमक्षय्यमाचारो हन्त्यलक्षणम्।। मनु०, 4/156
13. शब्दकल्पद्रुम, प्रथम भाग, पृ० 168
14. भारतीय दर्शन का परिशीलन, रमाशंकर त्रिपाठी, पृ० 20
15. The study of what is right or good in conduct "or the science of ideal involved in human lite". Makenzi,भारतीय नीतिशास्त्र, डॉ० दिवाकर पाठक, पृ० 2
16. वही, पृ० 2

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org

2. नीति से अभिप्राय

नीति शब्द संस्कृत की 'नी' धातु से क्तिन् प्रत्यय से बना है जिसका शाब्दिक अर्थ है – ले जाना, निर्देशन, दिग्दर्शन, प्रबन्ध, आचरण, औचित्य, आचार शास्त्र आदि।[17] नीति शब्द से अभिप्राय वे नियम जिन पर चलने से मनुष्य का ऐहिक, आमुष्मिक और सनातन कल्याण हो, समाज में स्थिरता और सन्तुलन रहे, सब प्रकार से अभ्युदय हो और विश्व में शान्ति रहे अर्थात् जिन नियमों के पालन करने से व्यक्ति और समाज दोनों का ही श्रेय हो। वह नीति है।[18]

2.1 कुछ भारतीय दार्शनिक नीतिशास्त्र की परिभाषा इस प्रकार देते हैं

शुक्रनीति तथा कामन्दकीय नीतिसार के अनुसार, इस शास्त्र को नीतिशास्त्र इसलिए कहा जाता है क्योंकि वह नमन व्यापर का कार्य (ले चलने का कार्य) करता है।[19] नीतिमञ्जरी में कहा है 'वह कर्त्तव्य है तथा यह कर्त्तव्य नहीं है इस प्रकार की व्यवस्था जो धर्मशास्त्र करता है, वह नीतिशास्त्र कहलाता है।[20] ब्रह्मवैवर्त पुराण में नीतिशास्त्र सत्य, हित और परिणाम में सुख देने वाली बातों की चर्चा करता है।[21] भर्तृहरि के नीतिशासक में प्रयुक्त नीति से अभिप्राय सामान्य नीति से है।[22] प्रत्यके स्थान पर ऐसे वाक्य भी दृष्टिगत होते हैं जो नीति की बात कहते हैं यथा नीति में निपुण (नीतिज्ञ पुरूष) मेरी निन्दा करें या स्तुति करें।[23] यहाँ पर उपलब्ध नीति शब्द क्रमशः सविवेक व्यवहार और लोकोचित व्यवहार के अर्थ में प्रयक्त है।

3. भारतीय परम्परा में नीतिशास्त्र का महत्त्व

भारतीय परम्परा में नीतिशास्त्र को समस्त विद्याओं का प्रारम्भ माना गया[24] अर्थात् नीतिशास्त्र के ज्ञान से ही समस्त शास्त्रों का सच्चा ज्ञान सम्भव होता है। आचार शास्त्र का सम्बन्ध न केवल आचार सम्बन्धी नियमों से है अपितु यह आचरण का उपाय भी बतलाता है। क्योंकि आचरण के अभाव में सिद्धान्तों का ज्ञान व्यर्थ है। इसीलिए नीतिशास्त्र को सहायक माना गया है।[25] जिन सभी भारतीय ग्रन्थों में नीति, आचार, धर्म और आध्यात्मिक साधना सम्बन्धी चर्चा पाई जाती है वे सब भारतीय नीति शास्त्र के अन्तर्गत आते है।[26] नीति या आचार शास्त्रों में हम नैतिक नियमों की चर्चा करते हैं जिनका प्रमुख उद्देश्य जीवन के मुख्य लक्ष्य को बताना है।[27]

4. भारतीय दर्शन शास्त्र पर आचार या नीतिशास्त्र का प्रभाव

भारतीय दर्शन पर आचार या नीतिशास्त्र का प्रभाव दिखाई देता है नीतिशास्त्र का सम्बन्ध आचरण से है। आचरण से ही मानव के समस्त कर्म एवं नैतिक प्रत्यय सम्बन्धित हैं। नीतियुक्त आचरण ही नैतिकता है।[28] नीतिशास्त्र का प्रमुख उद्देश्य परम सुख की प्राप्ति है। इसी प्रकार आस्तिक दर्शनों में भी नैतिक विचारों का उल्लेख मिलता है। जिनका मुख्य उद्देश्य मोक्ष की प्राप्ति है। भारतीय दर्शन नीतिशास्त्र के सिद्धान्तों को पूर्ण रूप से स्वीकार करता है।[29] नीतिशास्त्र यह निर्णय करता है कि हमारा आचरण कैसा होना चाहिए और कैसा नहीं होना चाहिए। जीवन का सर्वोच्च शुभ क्या है ? पाप–पुण्य, कर्म–अकर्म, धर्म–अधर्म, शुभ–अशुभ, अच्छा–बुरा, उचित–अनुचित आदि तथ्यों का विवेचन नीतिशास्त्र की विषयवस्तु है।[30] साथ ही दर्शन शास्त्र भी इन्हीं सब विषयों पर प्रकाश ड़ालता है। इस प्रकार नीतिशास्त्र अथवा आचार शास्त्र तथा दर्शन शास्त्र मनुष्य को उसके परम लक्ष्य तक पहुँचाने में सबसे महत्वपूर्ण साधन हैं।

---

17. भारतीय नीतिशास्त्र, पृ० 3
18. भारतीय नीतिशास्त्र का इतिहास, डॉ० भी० ला० आत्रेय, पृ० 612
19 'नयनान्नीति रूच्यते', शुक्रनीतिसार, 1–56 'एवम् कर्त्तव्यम् एवं न कर्त्तव्यम् इत्यात्मको यो धर्मः सा नीतिः'
20 द्या द्विवेदी, नीतिमंजरी, पृ० 1
21 तस्यां तु सर्व विद्यानामाम्भाः समुदाह्याताः, कामन्दकीय नीतिशास्त्र, 215
22 सर्वोपजीवकं लोकस्थितिन्नीति शास्त्रकम्। धमार्थ काम मूलं हि स्मृतं मोक्ष प्रदंयतः।। कामन्दकीय नीतिशास्त्र, 214
23 भारतीय नीतिशास्त्र, डॉ० दिवाकर पाठक, पृ० 4
24 ब्रह्म वैवर्त्त पुराण, 115–13
25 प्रीतिः साधुजनों नयो नृपजने विद्वज्जनेष्वार्जवम्, शतकत्रयम्, संस्कृत टीका 'नयो नीतिः', पृ० 11, पद्य 181
26 निन्दन्तु नीति निपुणा भदि वा स्तुवन्तु, शतकत्रयम्, संस्कृत टीका नीति निपुणाः नम विशारदा, पृ० 44/751
27 भारतीय दर्शन का परिशीलन, रमाशंकर त्रिपाठी, पृ० 51
28 पाश्चात्य नीतिशास्त्र, डॉ० मुकेश चन्द्र ड़िमरी, पृ० 3
29 भारतीय दर्शन का परिशीलन, डॉ० रमा शंकर त्रिपाठी, पृ० 20
30 पश्चात्य नीति शास्त्र, डॉ० मुकेश चन्द्र ड़िमरी, पृ० 3

Copyright © 2017 Published by kaav publications. All rights reserved www.kaavpublications.org